रात्रिक्लास 28.3.68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

बेहद के बड़े–2 बाप से बेहद का ऊँच दर्जा मिलता है। वह है स्वर्ग। स्वर्ग में भी फिर दर्जे हैं। आमदनी तो बड़ी अच्छी है। इतना बड़ा वर्सा किसको भी पता नहीं मिलता है। फिर स्वर्ग में मालिक तो सभी कहेंगे ना। वहां ऐसा कुछ समझ में आता नहीं है। कहना भी नहीं पड़ता है कि हम स्वर्ग के मालिक हैं। शायद वहां स्वर्ग का नाम भी न हो। नई दुनियां के मालिक हैं। एक ही धर्म है। वहां कोई नक्शे आदि भी नहीं दूसरे धर्म का पता ही नहीं रहता। उनको यह पता नहीं है कि दूसरा भी कोई धर्म था पास्ट में। आदि, मध्य, अंत पास्ट, प्रेजेन्ट, फ्यूचर को तुम ही जानते हो। इस समय ही तुम यह सभी बातें समझते हो। सभी मौजूद हैं। पास्ट का भी बाप समझा रहे हैं। इसको कहा जाता है आदि–मध्य–अंत और डेक्यूरेशन को भी जान गये हो। यही तो जानना है। यह तो बच्चे सभी जानते हैं। सदैव खुशी रहती; क्योंकि माया भुला देती है। बाबा ने समझाया था मैगज़ीन जो निकली है। अखबारें पढ़कर जो मनुष्य डालते हैं उनका फिर रेसपॉण्ड भी करते हैं, वह है अच्छी। सर्विसएबुल भी हैं; परन्तु जब वह अलग रैयत को बांटा जाये। जो अपने ही योग आदि को ऊँच समझते हैं उन्हों के पास जावे। हफ्ते में एक/दो हज़ार जाये। भल फ्री भी जावें। तुम फ्री तो बहुतों को देते हो ना। नॉलेज सभी को देते हो। कोई समझते हैं, कोई नहीं समझते हैं। तो मैगज़ीन में कोई अच्छी2 बाते हैं। यह भी बाप समझाते हैं और जिसने डाला वह समझ सकते हैं। और पढ़ने वाले इतना नहीं समझ सकते हैं। तो यह फ्री भी भेजा जाये। अच्छा समझ कर कोई समय शायद पूछे भी इनका दाम क्या है? यह है रूहानी नॉलेज। बोलो, इनका पैसा नहीं लिया जाता। गॉड–फादर पढ़ाते हैं। बच्चों से फी क्या लेंगे? गवर्मेन्ट का है तो लेना है। यह तो बाप का प्राइवेट है ना। चाहे लेवे या न लेवे। मैगज़ीन तो मांगते हैं। वह इतना समझते नहीं है। जैसे बुद्धू लोग। बहुत महारथी तो पढ़ते ही नहीं हैं। बाबा सुना तो बहुत अच्छा लगा। उनको राय मिलनी चाहिए बहुतों को भेज देवें। फिर अखबार निकलेंगे तो उनको मदद भी देंगे। बाप चाहते हैं ऐसी–2 मैगज़ीन जानी चाहिए। खास–2 काम्पेलरी भेज देनी चाहिए। हज़ार भी खर्चा आये, फ्री भी भेज दी जाये तो कोई हर्जा नहीं। अच्छा, बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।